International Journal of Multidisciplinary Trends

E-ISSN: 2709-9369
P-ISSN: 2709-9350
www.multisubjectjournal.com
IJMT 2023; 5(3): 14-18
Received: 26-12-2023
Accepted: 29-01-2023

डॉ. आरती पाण्डेय
सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, गार्गी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

Corresponding Author:
डॉ. आरती पाण्डेय
सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, गार्गी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

हिन्दी भाषा के विकास में पंडित मदन मोहन मालवीय का योगदान

डॉ. आरती पाण्डेय

सारांश:
प्रस्तुत शोध आलेख में मुख्य रूप से पंडित मदन मोहन मालवीय जी के द्वारा हिन्दी भाषा और देवनागरी लिपि के प्रचार-प्रसार और उसकी उन्नति के लिए किए गए कार्यों की चर्चा की गई है। प्रस्तुत शोध आलेख के अंतर्गत स्वतंत्रता आन्दोलन के समानांतर चलने वाले भाषा, हिन्दी भाषा और देवनागरी लिपि संबंधी विमर्श को सामने रखते हुए मालवीय जी के हिन्दी भाषा और देवनागरी लिपि संबंधी विचारों और कार्यों को सामने लाया गया है। इसके साथ ही पत्रकारिता के माध्यम से भी मालवीय जी ने हिन्दी की जो सेवा की उसका उल्लेख्य प्रस्तुत किया गया है।

कूटशब्द: मदन मोहन मालवीय, हिन्दी भाषा, देवनागरी लिपि, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, मातृभाषा, राष्ट्रभाषा, स्वतंत्रता आन्दोलन, गाँधी

प्रस्तावना

पंडित मदन मोहन मालवीय वैसी शख्सियत में गिने जाते हैं, जिन्होंने ब्रिटिशकालीन भारत में अनेक कार्यों से अपने देश की सेवा की। ये अत्यंत ही बहुआयामी प्रतिभा के व्यक्ति थे। जीवनभर समाज और देश की सेवा के लिए सजग और सक्रिय रहे। अमूमन, मालवीय जी को 'काशी हिन्दू विश्वविद्यालय' के संस्थापक के रूप में ही जाना जाता है, परन्तु इससे बढ़ कर उनका योगदान अन्य कई क्षेत्रों में रहा। इनका जन्म उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद(अब के प्रयागराज) में 25 दिसंबर, 1861 ई. में हुआ था। हालाँकि, "मालवीय जी के पूर्वज मध्य भारत के मालवा प्रदेश के निवासी थे। वे पंद्रहवीं शती के मध्य में वर्तमान उत्तर प्रदेश में चले आए थे। "[1]

मालवीय जी बहुआयामी प्रतिभा के थे। इन्होंने एक साथ कई अलग-अलग क्षेत्रों में काम किया। ये एक स्वतंत्रता सेनानी, राजनीतिज्ञ, प्रखर वक्ता, वकील, पत्रकार, शिक्षाशास्त्री और समाज सुधारक थे। स्वतंत्रता आन्दोलन में ये सक्रिय रूप से जुड़े रहे। मालवीय जी वकालत का पेशा छोड़ कर स्वतंत्रता आन्दोलन में उतरे थे।

वकालत के क्षेत्र में भी इन्होंने बनी-बनाई लीक पर चलने का काम नहीं किया यहाँ भी ये अपने सिद्धांतों के साथ काम कर रहे थे इन्होंने वकालत करते हुए कभी भी कोई झूठा मुकदमा नहीं लिया। वकालत के पेशे से जुड़ा एक ऐतिहासिक प्रसंग है जो मालवीय जी के महान व्यक्तित्व की झलक पेश करता है। 15 फरवरी, 1922 को जब चौरी चौरा थाने में आग लगा दिया गया और उस मुक़दमे में 170 लोगों को फांसी की सजा सुना दी गई थी तब यह मुकदमा प्रयाग उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश के पास पहुँचा। मालवीय जी ने बहुत पहले वकालत छोड़ देने के बावजूद इस मुक़दमे को अपने हाथों में लिया और अपनी दलील के बल पर सभी अभियुक्तों की फांसी की सजा को रद्द करवाया। ख़ुद न्यायाधीश ने अंत में इनकी प्रशंसा करते हुए कहा- "जिस विस्मयजनक योग्यता के साथ आपने इस मुक़दमे में बहस की है, उसके लिए ये सभी अभियुक्त और उनके परिवार सदा आपके कृतज्ञ रहेंगे। मैं अपनी ओर से और अपने सहयोगी न्यायमूर्ति की ओर से भी इस सुन्दर रीति से इस मुक़दमे की बहस पर आपको बधाई देता हूँ। आपके अतिरिक्त कोई भी अन्य व्यक्ति इस मुक़दमे को इतने अच्छे ढंग से प्रस्तुत नहीं कर सकता था। "[2]

वकालत से भी पहले ये एक स्कूल शिक्षक के रूप में कार्यरत रहे। महात्मा गाँधी इनके व्यक्तित्व से बहुत ज्यादा प्रभावित थे। इन्होंने ही मदन मोहन मालवीय जी को 'महामना' की उपाधि प्रदान की थी। इसके अलावा 'भारत-भूषण' की भी उपाधि इन्हें गाँधी जी की ही तरफ से मिली। गाँधी जी ने इनके महान व्यक्तित्व से प्रभावित होकर कहा था कि "तिलक मुझे हिमालय की तरह लगते थे। जब मुझे लगा कि मेरे लिए इतना ऊँचा चढ़ पाना संभव नहीं होगा तो मैं गोखले के पास गया। वे मुझे एक गहरे समुद्र की तरह लगे। मुझे लगा कि मेरे लिए इतना गहरे उतर पाना संभव नहीं है। अंत में मैं मालवीय जी के पास गया, वो मुझे गंगा की निर्मल धारा की तरह लगे और मैंने तय किया कि मैं उस पवित्र धारा में डुबकी लगा लूं। मेरे चरित्र में दाग हो सकता है मगर मदन मोहन मालवीय बेदाग हैं। "[3]

पंडित मदन मोहन मालवीय ने अपना लम्बा समय कांग्रेस में बिताया था। ये चार बार (1909, 1918, 1930 और 1932 में) कांग्रेस के अध्यक्ष रह चुके थे और तीन बार 'हिन्दू महासभा' के भी अध्यक्ष रहे। राजनीति के साथ-साथ इन्हें भाषा, साहित्य और गोष्ठियों से भी बहुत ज्यादा लगाव था। ये हिन्दी के अलावा संस्कृत और अंग्रेजी में भी पारंगत थे। मगर, हिन्दी भाषा से इनका भावनात्मक लगाव था। हिन्दी भाषा के विकास में इनका चतुर्दिक योगदान रहा। हिन्दी भाषा और नागरी लिपि के उद्धार और उसके प्रचार-प्रसार में इन्होंने बहुत योगदान दिया।

ब्रिटिश शासन के दौरान हिन्दी भाषा के साथ सौतेला व्यवहार हो रहा था, जिसके कारण हिन्दीभाषी जनता क्षुब्ध थी। कचहरियों में काम-काज की भाषा फ़ारसी से लदी उर्दू भाषा थी। इस कारण, हिन्दीभाषी जनता को समस्याएं झेलनी पड़ती थी। इसके खिलाफ हिन्दी को भी उत्तर प्रदेश की कचहरियों में काम-काज की भाषा बनाने हेतु जो आन्दोलन शुरू हुआ, उसमें मदन मोहन मालवीय ने शुरुआत से ही अपनी पक्षधरता और सक्रियता स्पष्ट की। मालवीय जी हिन्दी उद्धारिणी प्रतिनिधि सभा, काशी नागरी प्रचारिणी सभा आदि जैसे हिन्दी सेवी संस्थाओं के सक्रिय सदस्य के रूप में रहे। पत्रकारिता के क्षेत्र में इनकी सक्रियता बहुत ज्यादा रही। ये हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार हेतु कई पत्रिकाओं में लेखन करते रहे। इन्होंने कई हिन्दी पत्रिकाओं का संपादन भी लंबे समय तक किया। "सर्वप्रथम उन्होंने दैनिक 'हिन्दोस्थान' पत्र का संपादन किया। उसके बाद सन 1907 में उन्होंने इलाहबाद से 'अभ्युदय' का प्रकाशन प्रारंभ किया। अंग्रेजी दैनिक पत्र 'लीडर' का प्रारंभ भी किया। "[4] इसके अलावा 'इंडियन यूनियन', ' इंडियन ओपिनियन', ' मर्यादा', और 'हिन्दुस्तान टाइम्स' के साथ भी इन्होंने काम किया। गौरतलब है कि इन्होंने स्वतंत्रता आन्दोलन में बतौर पत्रकार ही प्रवेश किया था।

1884 में हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार के लिए स्थापित 'हिन्दी उद्धारिणी प्रतिनिधि सभा' के साथ भी सदस्य के रूप में ये लंबे समय तक जुड़े रहे और हिन्दी की सेवा में योगदान देते रहे। 1892 में बाबू श्यामसुंदर दास, शिवकुमार सिंह और रामनारायण पाण्डेय ने देवनागरी लिपि के प्रचार-प्रसार और हिन्दी भाषा के उन्नयन हेतु 'काशी नागरी प्रचारिणी सभा' की स्थापना की। हिन्दी भाषा और साहित्य के क्षेत्र में इस संस्था का शुरुआत से ही व्यापक योगदान रहा है। यह एक शोधपरक संस्था रही, जिसने हिन्दी भाषा और साहित्य की सम्पदा में उल्लेखनीय बढ़ोतरी की। "मालवीय जी ने प्रारम्भ से ही काशी नागरी प्रचारिणी सभा के कार्यों में सक्रिय रूचि प्रदर्शित की। उनका कार्य आंदोलनात्मक न होकर रचनात्मक होता था। उन्होंने घूम-घूम कर बड़े परिश्रम से ऐसे आंकड़े और ऐसी सामग्री एकत्र की जिसके द्वारा यह सिद्ध करना सरल हो गया कि फ़ारसी लिपि और फ़ारसी शब्दों से भरी हुई उर्दू को चलाए रखना व्यर्थ है और कचहरियों में हिन्दी भाषा और देवनागरी लिपि चलाना नितांत आवश्यक है। "[5]

उत्तर प्रदेश की कचहरियों में काम-काज की भाषा के रूप में हिन्दी को स्थान दिलाने के लिए यह संस्था पुरजोर तरीके से काम कर रही थी। मालवीय जी इसमें एक सक्रिय सदस्य के रूप में कार्य कर रहे थे। हर गतिविधि में इनकी उपस्थिति होती थी। 1898 में नागरी प्रचारिणी सभा की तरफ से उत्तर प्रदेश के प्रान्तीय गवर्नर के पास जाने वाले डैपुटेशन में ये भी शामिल थे। पंडित मदनमोहन मालवीय ने पंडित श्रीकृष्ण जोशी के साथ मिल कर कड़ी मेहनत से एक दस्तावेज (कोर्ट कैरेक्टर एंड प्राइमरी एजुकेशन इन नॉर्थ वेस्ट प्रोविंस) तैयार किया था और 2 मार्च, 1898 को प्रान्तीय गवर्नर के पास इस दस्तावेज को साथ लेकर गए थे। इस दस्तावेज को मालवीय जी ने तथ्यों और रेकॉर्डों के साथ तैयार किया था। मालवीय जी के इस दस्तावेज का यह प्रभाव पड़ा कि 18 अप्रैल, 1900 को ए. पी. मैकडोनल ने नागरी लिपि को भी कचहरी की कार्यवाही में शामिल करने का आदेश पारित कर दिया। हिन्दी भाषा और नागरी लिपि के विकास में यह फैसला ऐतिहासिक साबित हुआ।

हिन्दी साहित्य सम्मलेन के पहले सम्मलेन में अपने अध्यक्षीय भाषण में भी मालवीय जी इस घटना का जिक्र करते हुए कहते हैं- "अंत में सर एंटनी मेकडानल का भला हो, उन्होंने यह आज्ञा दी कि कचहरियों में जो दरख्वास्तें दी जावें वह हिन्दी उर्दू दोनों में लिखी जावें। उस समय से हम लोग हिन्दी भाषा की विशेष उन्नति करने लगे हैं।"[6]

मालवीय जी ने 1910 में 'हिन्दी साहित्य सम्मलेन' की स्थापना की। इस संस्था के माध्यम से भी मालवीय जी ने हिन्दी की बड़ी सेवा की। इस मंच के माध्यम से वे लगातार सभी को हिन्दी सीखने का आह्वान करते रहे। हिन्दी साहित्य सम्मलेन के पहले सम्मलेन में अध्यक्षीय भाषण देते हुए भी वे सभी से हिन्दी सीखने का आह्वान करते हैं और साथ ही हिन्दी को राष्ट्रभाषा का दर्जा देने की भी वकालत करते हैं। इसके अलावा अन्य कई मंचों से ये देवनागरी लिपि में लिखी गई हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में मान्यता प्रदान करने की वकालत करते रहे। ऐसा नहीं है कि मालवीय जी भारत की प्रान्तीय भाषाओं का सम्मान नहीं करते थे, उसकी जरुरत नहीं समझते थे। उन्होंने कई बार प्रान्तीय भाषाओं की उन्नति की आवश्यकता को ज़रूरी बताया। सन् 1919 में हिन्दी साहित्य सम्मलेन के 9वें सम्मलेन के अपने अध्यक्षीय भाषण के इस अंश के माध्यम से इस बात की पुष्टि की जा सकती है- "हम यह नहीं कहते कि देशभर में एक ही भाषा रहे, नहीं, सब प्रान्त में अपने-अपने प्रान्तों की भाषा की उन्नति हो। इन सब के रहते हुए हिन्दी भाषा राष्ट्रभाषा के तौर पर प्रयुक्त हो। अभी तक जो कार्य अंग्रेजी में होता आया है वह अब हिन्दी के द्वारा हो। "[7]

मालवीय जी का हिन्दी प्रेम किसी अन्य भाषा के प्रति दुर्भावना के तहत नहीं था, वे सभी भाषा का सम्मान करते थे, परन्तु, उन्होंने हमेशा इस बात को पुरजोर तरीके से सभी के समक्ष रखा कि देश की उन्नति मातृभाषा के माध्यम से ही संभव है। यही कारण है कि वे पठन-पाठन और सरकारी काम-काज की भाषा के रूप में मातृभाषा की वकालत करते थे। वे इस चलन के बिलकुल खिलाफ थे कि शिक्षण और अदालती काम-काज का संचालन उस भाषा में हो जिस भाषा को अधिकांश जनता समझती ही नहीं है। उनका स्पष्ट तौर पर मानना था कि "साहित्य

और देश की उन्नति अपने देश की भाषा की द्वारा हो सकती है। "[8]

मालवीय जी कई भिन्न-भिन्न हिन्दी सेवी संस्थाओं के साथ जुड़े रहे। इसी कड़ी में 'भारती भवन' संस्था का भी उल्लेख्य आवश्यक है, जो मूल रूप से एक पुस्तकालय था। "सन् 1889 में मालवीय जी के स्थान के निकट 'भारती भवन' नाम से एक पुस्तकालय स्थापित हुआ, जिसका उद्देश्य था- हिन्दी और संस्कृत की पुस्तकों का संग्रह तथा उनके अध्ययन को बढ़ावा देना। मालवीय जी इसकी परिरक्षक समिति के अध्यक्ष नियुक्त हुए और आजीवन इस पद से पुस्तकालय की सेवा करते रहे। "[9]

मालवीय जी उत्कट हिन्दी प्रेमी थे। हिन्दी की सेवा और उन्नति के लिए ये सभी को एक साथ लेकर चलने को तत्पर थे। ये घोर सनातनी थे। आर्य समाज के साथ इनके कई वैचारिक मतभेद थे; इसके बावजूद इन्होंने आर्य समाज द्वारा की गई हिन्दी की सेवा के लिए उनका आदर करते थे।

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना मालवीय जी का एक महान कार्य था। प्रसिद्द है कि इसकी स्थापना के लिए इन्होंने पूरे देश में जा जा कर लोगों से चंदा माँगा। यह विश्वविद्यालय उनके जीवन का बहुत बड़ा प्रतिष्ठान माना जाता है। इस संस्थान की गतिविधियों और कार्यवाहियों में भी मालवीय जी का हिन्दी प्रेम स्पष्ट रूप से दिखलाई पड़ता है। शिक्षा और पठन-पाठन के माध्यम की भाषा को लेकर वे हमेशा मुखर रहे। उन्होंने हमेशा इस बात की महत्ता प्रकट की कि शिक्षा का माध्यम अपनी मातृभाषा होनी चाहिए न कि कोई विदेशी भाषा। कुलपति के रूप में भाषण देते हुए मालवीय जी ने स्पष्ट रूप से कहा था कि "भारतीय विद्यार्थियों के मार्ग में आने वाली वर्तमान कठिनाईयों का कोई अंत नहीं। सबसे बड़ी कठिनता यह है कि शिक्षा का माध्यम हमारी मातृभाषा न होकर एक अत्यंत दुरूह विदेशी भाषा है। सभ्य संसार के किसी भी अन्य भाग में जन-समुदाय की शिक्षा का माध्यम विदेशी भाषा नहीं है। "[10]

मालवीय जी देश के विकास में मातृभाषा का महत्त्व बिना किसी हिचक के स्वीकार करते थे। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना के बाद इन्होंने हिन्दी भाषा को गंभीरता के साथ प्रचलन में लाने के कई उपाय किए। "जब काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना हुई उस समय मालवीय जी ने विश्वविद्यालय के अध्ययनीय विषयों में हिन्दी साहित्य को भी जोड़ दिया। ....मालवीय जी ने ही काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में विज्ञान और तकनीकी विषयों के अतिरिक्त अन्य सब विषयों के प्रश्नपत्रों का उत्तर हिन्दी में देने की सुविधा प्रदान की। "[11]

मालवीय जी का हिन्दी प्रेम जगजाहिर था। यह प्रेम एक बार उनके काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना के काम में ही रोड़ा बनने जा रहा था। दरअसल, हुआ यूँ कि "जब ब्रिटिश सरकार के कान में यह भनक पड़ी कि इस नवीन विश्वविद्यालय में हिन्दी के माध्यम से शिक्षा दी जाएगी तो उसके कान खड़े हुए। वायसराय के शिक्षा सचिव हरकोर्ट बटलर ने मालवीय जी से स्पष्ट कह दिया कि यदि इस विश्वविद्यालय में मातृभाषा के माध्यम से शिक्षा दी गई तो आप सरकार से किसी प्रकार के सहयोग की आशा न रखिये... ।"[12] इस बात की खबर आगे तक गई पर मालवीय जी ने चालाकी का परिचय दिया और विश्वविद्यालय की योजना को सुचारू रूप से आगे बढ़ने में कोई रूकावट न आने दी।

मालवीय जी ने देश की समृद्धि और उन्नति के लिए जिस प्रकार से राष्ट्रीयता, पुरातनता और सनातन धर्म की आवश्यकता पर बल दिया, उतना ही महत्त्व उन्होंने मातृभाषा को भी दिया। वे अक्सर इंग्लैंड और अन्य विकसित देशों की समृद्धि के पीछे इन कारकों को महत्त्वपूर्ण मानते थे। देवनागरी लिपि और हिन्दी भाषा का गहन अध्ययन कर इन्होंने इसकी विशेषताओं को प्रचारित-प्रसारित करने का काम किया। इन्होंने देवनागरी लिपि को दुनिया की अन्य सभी लिपियों से श्रेष्ठ और मनोहर माना। हिन्दी भाषा की समृद्धि के लिए इन्होंने चौतरफा आयोजन और परिश्रम किया। स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान भाषा और मातृभाषा की उपयोगिता की बहस सामने आई, उसके मद्देनजर मालवीय जी ने हिन्दी के समर्थन में हमेशा अपना मजबूत पक्ष रखा। देश की प्रान्तीय भाषाओं की उन्नति और उसमें शिक्षा के कार्य के साथ ही साथ वे हिन्दी भाषा को

राष्ट्रभाषा के रूप में मान्यता देने की माँग खुल कर करते रहे। ये अपनी अन्य गतिविधियों के साथ-साथ हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार और उसकी समृद्धि के लिए हमेशा प्रयासरत रहे। इन्होंने हिन्दी सेवा के अलावा समाज और देश हित के अन्य सभी कामों को ईमानदारी और निष्ठापूर्वक किया। मालवीय जी के साथ 30 दिन बिताने वाले हिन्दी के कवि रामनरेश त्रिपाठी इस सन्दर्भ में सच ही लिखते हैं कि "मालवीय जी के साथ रहने वालों से मालूम हुआ कि वे जो काम करते हैं, उसे आदि से अंत तक स्वयं करते हैं। उनका अपने ही पर अधिक विश्वास है। "[13]

मालवीय जी की इसी मजबूत इच्छाशक्ति ने उनके हर प्रयास को मंजिल तक पहुँचाने का काम किया। हिन्दी की सेवा में इन्होंने अपना अमूल्य योगदान दिया। हिन्दी के विकास की यात्रा की चर्चा उनके नाम के बगैर नहीं की जा सकती।

सन्दर्भ

1. चतुर्वेदी, सीताराम, मदन मोहन मालवीय, नई दिल्ली, प्रकाशन विभाग सुचना और प्रसारण मंत्रालय, 1980, पृष्ठ संख्या 1
2. ---------, ----------, मदन मोहन मालवीय, नई दिल्ली, प्रकाशन विभाग सुचना और प्रसारण मंत्रालय, 1980, पृष्ठ संख्या 31 से उद्धृत
3. पांडे, विश्वनाथ, पंडित मदन मोहन मालवीय एंड द फॉरमेटिव इयर्स ऑफ़ इंडियन नेशनलिज्म, भारत, एल. जी. पब्लिशर्स, 2015, पृष्ठ संख्या 31 से उद्धृत
4. शर्मा, कुमुद, हिन्दी के निर्माता, नई दिल्ली, भारतीय ज्ञानपीठ, 2009, पृष्ठ संख्या 64-65
5. चतुर्वेदी, सीताराम, मदन मोहन मालवीय, नई दिल्ली, प्रकाशन विभाग सुचना और प्रसारण मंत्रालय, 1980, पृष्ठ संख्या 44-45
6. प्रथम हिन्दी साहित्य सम्मलेन अध्यक्षीय भाषण, मदन मोहन मालवीय, हिन्दीसमय.कॉम. वेब. https://www.hindisamay.com/content/11719/1
7. महामना मालवीय जी के वचन, मदन मोहन मालवीय, हिन्दीसमय.कॉम. वेब. https://www.hindisamay.com/content/11719/1
8. वही.
9. मिश्रा, प्रो. कौशल किशोर, भारत रत्न महामना पंडित मदन मोहन मालवीय जी के चिंतन का अध्ययन, नई दिल्ली, के. के. पब्लिकेशन, 2021, पृष्ठ संख्या 8
10. मान, मंजू, महामना पंडित मदन मोहन मालवीय, नई दिल्ली, ज्ञान विज्ञान एजुकेयर, 2014, पृष्ठ संख्या 102 से उद्धृत
11. चतुर्वेदी, सीताराम, मदन मोहन मालवीय, नई दिल्ली, प्रकाशन विभाग सुचना और प्रसारण मंत्रालय, 1980, पृष्ठ संख्या 45-46
12. ---------, ----------, मदन मोहन मालवीय, नई दिल्ली, प्रकाशन विभाग सुचना और प्रसारण मंत्रालय, 1980, पृष्ठ संख्या 63
13. त्रिपाठी, रामनरेश. तीस दिन मालवीय जी के साथ. नई दिल्ली, सस्ता साहित्य मंडल. 1946. पृष्ठ संख्या 8.